बहुभाषी शिक्षण और पालकों से बातचीत

लेखक: द्रोण साहू, प्रधान पाठक, महासमुंद, छत्तीसगढ़

उस दिन मैं रोज़ की तरह कक्षा-1 में था। बच्चों को मैंने एक छोटी-सी कहानी सुनाई थी। कहानी खत्म होने के बाद हम आपस में उस पर बातचीत कर रहे थे—किसे क्या पसंद आया, कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा, क्यों अच्छा लगा...। बच्चे अपने घर की भाषा छत्तीसगढ़ी और संबलपुरी में जवाब दे रहे थे।

इसी दौरान, गौरी के पापा जो कि गाँव में किराने की दुकान चलाते हैं और पढ़े-लिखे भी हैं, स्कूल आए। उन्होंने आते ही हल्के से कहा, "सर, ज़रा बात करनी थी।" मैंने उन्हें 5 मिनट इंतज़ार करने को कहा।

मैंने अपने बच्चों को जो कहानी सुनाई थी, उसमें से अपने मनपसंद पात्र पर चित्र बनाने का काम दिया और पालक को स्टाफ कक्ष में ले जाकर उनसे बात करनी शुरू की। उन्होंने अपनी बात कुछ इस तरह रखी "सर ! मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि आप बच्चों को हिंदी पढ़ाने के बजाय छत्तीसगढ़ी क्यों पढ़ाते हैं? बच्चे तो पहले से ही छत्तीसगढ़ी बोलते-समझते हैं, तो फिर उन्हें छत्तीसगढ़ी पढ़ाने की क्या जरूरत है? हम चाहते हैं कि स्कूल में बच्चे हिंदी, इंग्लिश सीखें, पर यदि आप उनसे छत्तीसगढ़ी में बात करते रहेंगे, वे स्कूल में भी छत्तीसगढ़ी सुनते-बोलते रहेंगे तो वे हिंदी, इंग्लिश कब सीखेंगे? इसके लिए तो टाइम ही नहीं मिलेगा!"

मैं उनके सभी सवालों को ध्यान से सुनता रहा। उनकी बात पुरी होने के बाद मैंने सबसे पहले तो उन्हें आश्वस्त किया कि उनके सवाल एकदम वाजिब हैं, अक्सर माता-पिता के मन में ऐसे सवाल आते हैं। इसके बाद मैंने उन्हें कुछ बिंदु समझाए, जो इस तरह से हैं -

हम बच्चों के साथ छत्तीसगढ़ी में बात एक सोची समझी रणनीति के तहत करते हैं। हम वास्तव में आपके बच्चे की मातृभाषा अर्थात छत्तीसगढ़ी को आधार बनाकर उन्हें स्कूल के शिक्षण की भाषा अर्थात हिंदी सिखाना चाहते हैं। शायद आपने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में सुना होगा। यह नीति बहुभाषी शिक्षा की बात करती है कि बच्चों को सिखाने के लिए उनके घर की भाषा का इस्तेमाल किया जाए। देश-विदेश में किए गए शोध यह बताते हैं कि बच्चे जब अपनी भाषा में सीखते हैं तो वे बेहतर सीख पाते हैं। साथ ही यह भी कि बच्चों के घर की भाषा जितनी मजबूत होगी, वे दूसरी भाषाएँ भी उतने ही बेहतर तरीके से सीख पाते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, हम अपनी कक्षा में काम कर रहे हैं।

बहुभाषी शिक्षा कभी भी किसी भी बच्चे को उनकी भाषा में रोककर रखने की बात नहीं करती है, बल्कि उनके घर की भाषा, उनके परिवेश, उनके पूर्व अनुभव, उनकी संस्कृति के माध्यम से स्कूल की भाषा सिखाना चाहती है। यहाँ एक तरह से बच्चे की घर की भाषा को स्कूल की भाषा तक लाने के लिए पुल की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

साथ ही, इससे बच्चे बेहतर तरीके से सीख भी पाते हैं। आप खुद ही सोचिए किसी अपरिचित अवधारणा को यदि आपको सीखना हो, तो आप अपनी भाषा में अधिक बेहतर ढंग से सीख पाएँगे या किसी ऐसी भाषा में, जिसे आप खुद समझने में दिक्कत महसूस करते हैं?

इसका एक फायदा यह भी होता है कि बच्चों को अपनी बात को सबके सामने रखने के लिए किसी प्रकार की झिझक महसूस नहीं होती। वे बेझिझक होकर हमसे किसी भी बात पर सवाल करते हैं। अपनी बात को स्वतंत्रतापूर्वक और बिना डरे रख पाते हैं। नई-नई बातों को सीखने के लिए तर्क कर पाते हैं, चिंतन कर पाते हैं और कल्पना कर पाते है। यदि बच्चे ये सभी अपनी भाषा का इस्तेमाल करते हुए सीख लेते हैं तो आगे स्कूल की भाषा में भी इस तरह के काम कर पाते हैं, जो उनके सीखने के लिए बहुत ज़रूरी हैं।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए, हम आपके बच्चे को हिंदी, छत्तीसगढ़ी और अंग्रेजी में से किसी भी भाषा के शब्दों को किसी भी वाक्य के साथ मिलाकर कक्षा में बोलने की पूरी आजादी देते हैं। इसे हम मिली-जुली भाषा कहते हैं। उससे बच्चा जाने- अनजाने में ही दूसरी भाषा अर्थात हिंदी और अंग्रेजी के कई शब्दों से परिचित होता जाता है और आगे चलकर वह अलग- अलग भाषा के शब्दों को लेकर पूरे वाक्य का प्रयोग भी करने लगता है। ये प्रयोग वह अनजाने में ही करता है, पर हम यह सब अपनी एक रणनीति के तहत सचेत होकर बच्चों के साथ करते हैं। यह बच्चों को स्कूल की भाषा सीखने में एक सीढ़ी की तरह काम करता है।

इसका मतलब यह हुआ कि हम आपके बच्चे को आपके घर में बोली जाने वाली भाषा को नहीं सीखा रहे हैं, बल्कि उसे उस भाषा में तर्क करना, चिंतन करना, कल्पना करना, अनुमान लगाना, किसी बात पर प्रश्न करना, किसी के सामने अपनी बात को बेझिझक और क्रम से रखना जैसी बातें सिखाते हैं। और रही बात हिंदी और अंग्रेजी में पढ़ाने की, तो जब आपका बच्चा इन मूलभूत बातों को सीख जाएगा, बहुत सारे शब्दों के अर्थ जान जाएगा तो फिर बड़ी कक्षा में उन्हें हम बेशक हिंदी या अंग्रेजी में पढ़ाएँगे।

गौरी के पिताजी अब कुछ सहज दिखने लगे। उन्होंने कहा, “बात तो समझ में आ रही है, लेकिन फिर भी थोड़ा संदेह है। वैसे राहुल के पापा भी यही कह रहे थे।”

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, “बिलकुल ठीक। इसी तरह की बातें कई माता-पिता के मन में आती हैं। इसलिए हम अगले सप्ताह एक छोटा-सी बैठक रखते हैं। आप और राहुल के पापा दोनों जरूर आइएगा। हम मिलकर इस पर विस्तार से बात करेंगे।”
गौरी के पिताजी के चेहरे पर अब हल्की मुस्कान थी। जाते-जाते बोले, “अच्छा लगा आपसे बात करके। मीटिंग में ज़रूर आएँगे।”

मुझे यह महसूस हुआ कि यह बातचीत सिर्फ एक अभिभावक से नहीं थी, बल्कि कई और माता-पिता को भी समझाने का रास्ता बन सकती है। और शायद, बच्चों की भाषा को अपनाकर हम सीखने की एक मजबूत नींव तैयार कर सकते हैं।

लेखक परिचय:

श्री द्रोण साहू एल एल एफ के नौ माह के कोर्स के प्रतिभागी रह चुके हैं। राज्य स्तर के ऍफ़ एल एन तथा ई सी सी ई के प्रशिक्षक हैं। राज्य स्तर पर नवा जतन तथा ऍफ़ एल एन के कोर ग्रुप के सदस्य हैं। वर्तमान में छत्तीसगढ़ की नई पाठयपुस्तकों के लेखन समिति के सदस्य भी हैं। वे “FLN संवाद : Voices from the Field” वेबिनार श्रृंखला के एपिसोड 5 के वक्ता भी रहे हैं।

पिछले लगभग 20 वर्षों से छत्तीसगढ़ तथा ओडिशा की सीमा में प्राइमरी स्कूल के आदिवासी बच्चों के साथ काम करना इन्हें बेहद पसंद है। इसके अलावा बच्चों के लिए कविताएं लिखना भी इनके शौक़ में शुमार है।